अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

आदिकालीन हिन्दी साहित्य का विवेचन

डॉ. रजनी सोलंकी
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
शासकीय महाविद्यालय भगवानपुरा जिला खरगोन मध्य प्रदेश, भारत
e-mail : drrajni2076@gmail.com

सारांश

आदिकालीन हिंदी साहित्य हिंदी साहित्य का प्रारंभिक युग है, जो लगभग 7वीं शताब्दी से लेकर 14वीं शताब्दी तक माना जाता है। इस काल में हिंदी भाषा का विकास हुआ और प्राचीन बोलियों से साहित्यिक रूपों का समुचित सृजन हुआ। इस युग को वीरगाथा काल भी कहा जाता है क्योंकि इस काल के साहित्य में वीरता की गाथाओं का प्रमुख स्थान था। आदिकालीन साहित्य मुख्यतः लोक-भाषा में था, जो आम जनता के जीवन, उनके संघर्षों और भावनाओं को प्रभावशाली रूप से प्रकट करता था। इसके अतिरिक्त, इस काल में युद्धों का सजीव वर्णन, राजाओं और योद्धाओं की महिमा और वीर रस की प्रधानता विशेष रुप से देखी जाती है। इस काल के साहित्य में श्रृंगार रस सहायक रूप में भी उपस्थित था। आदिकाल में हिंदी साहित्य की भाषा अवधी, ब्रज, खड़ी बोली, बिहारी जैसी लोक बोलियों का समिश्रण थी, जो सरल और प्रवाहमय होने के कारण आम जनता के लिए सुलभ थी। इस काल की भाषा में प्राकृतिक अभिव्यक्ति की प्रधानता थी ताकि भावपूर्णता और संवादिता बनी रहे। शैली में वीर रस और भक्ति रस प्रमुख थे, जो साहित्य की आत्मा माने जाते हैं। कविता में गाथा , दोहा, चौपाई जैसे छंदों का अधिक प्रयोग होता था, जिनमें लोक गीतों की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। इस युग के साहित्य में भावों की सूक्ष्मता के साथ-साथ सरलता एवं सहजता विशेष रूप से देखी जाती है।

कुन्जी शब्द - लोक-भाषा, भावपूर्ण अभिव्यक्ति, वीर और श्रृंगार रस आदि।

प्रस्तावना

आदिकालीन हिंदी साहित्य की भाषा अवधी, ब्रज, खड़ी बोली, बिहारी जैसी लोक बोलियों का समिश्रण थी, जो सरल और प्रवाहमय होने के कारण आम जनता के लिए सुलभ थी। इस काल की भाषा में प्राकृतिक अभिव्यक्ति की प्रधानता थी ताकि भावपूर्णता और संवादिता बनी रहे। शैली में वीर रस और भक्ति रस प्रमुख थे, जो साहित्य की आत्मा माने जाते हैं। कविता में गाथा, दोहा, चौपाई जैसे छंदों का अधिक प्रयोग होता था, जिनमें लोक गीतों की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। इस युग के साहित्य में भावों की सूक्ष्मता के साथ-साथ सरलता एवं सहजता विशेष रूप से देखी जाती है। आदिकाल सदा से विद्वानों के बीच विवाद का विषय रहा है। चाहे इसके नामकरण की बात हो या काल-विभाजन

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

की, आदिकाल को लेकर इतिहासकारों व विद्वानों के मध्य पर्याप्त मतभेद मिलते हैं क्योंकि आदिकाल के इतिहास का समुचित पर्यालोचन करने में इतिहासकारों व विद्वानों को कठिनाई होती है।

इसके पीछे का कारण यह है कि इस समय के कुछ ग्रंथ अप्राप्य हैं तो कुछ रचनाओं पर प्रामाणिकता-अप्रामाणिकता का सवाल लगा हुआ है, वहीं कुछ ग्रंथों में ऐतिहासिक सामंजस्य का अभाव है। साथ ही इस युग में धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक आदि सभी क्षेत्रों में परस्पर विरोधी तत्व दिखाई देते हैं। ऐसी स्थिति में किसी एक विशेष तत्व को ध्यान में रखकर इसका नाम निर्धारित कर देना उचित नहीं। आदिकाल का समय राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक हर दृष्टि से उथल-पुथल का समय था। आदिकालीन साहित्य को मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा जा सकता है। पहला धार्मिक साहित्य, जिसमें मूलतः सिद्ध, नाथ और जैन कवियों द्वारा रचित साहित्य आता है। इस साहित्य की रचना मुख्य रूप से अपने-अपने धर्मों के प्रचार.प्रसार के उद्देश्य से किया गया था। दूसरा रासो साहित्य, जिसकी रचना चारण कवियों के द्वारा अपने-अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा करने के उद्देश्य से किया गया था। इसके अतिरिक्त इस काल में कुछ मात्रा में लौकिक साहित्य और गद्य साहित्य की भी रचना हुई है।

समुचित परिप्रेक्ष्य में विचार किया जाए तो स्पष्ट होता है कि हिन्दी साहित्य का इतिहास अत्यन्त विस्तृत व प्राचीन है। हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास के सम्बन्ध में प्रचलित धारणाएँ इसके इतिहास को कम से कम ७वीं शताब्दी तक ले जातीं हैं। हिन्दी भाषा की उत्पत्ति का प्रश्न दसवीं शताब्दी के आसपास की प्राकृतभास भाषा तथा अपभ्रंश भाषाओं की ओर जाता है। अपभ्रंश शब्द की व्युत्पत्ति और जैन रचनाकारों की अपभ्रंश कृतियों का हिन्दी से सम्बन्ध स्थापित करने के लिए जो तर्क और प्रमाण हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थों में प्रस्तुत किये गये हैं उन पर विचार करना भी आवश्यक है।

आदिकाल की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

आदिकाल में एक ओर जहाँ कवियों द्वारा अपने-अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा में वीर काव्य रचे जा रहे थें तो वहीं दूसरी ओर सिद्धों, नाथों और जैनों के द्वारा भक्तिपरक काव्य भी रचे जा रहे थें। अतः इस युग के साहित्य को मूल रूप से रासो साहित्य और धार्मिक साहित्य दो भागों में बाँट कर देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त इस युग में स्वच्छंद प्रवृत्ति से लौकिक साहित्य भी रचे गए। साथ ही गद्य साहित्य के भी कुछ आरम्भिक संकेत इस युग में मिलते हैं। हालांकि इस युग की प्रामाणिकता संदिग्ध है परंतु संदिग्ध होते हुए भी इसके महत्व को भुलाया नहीं जा सकता।

आदिकालीन साहित्य, विशेषकर रासो साहित्य में निम्नलिखित प्रमुख प्रवृत्तियां देखने को मिलती हैं -

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

- युद्धों का सजीव वर्णन : इस काल के कवि केवल कलम के धनी नहीं थे, बल्कि वे तलवार के भी धनी थे। वे युद्ध भूमि में अपने आश्रयदाता राजाओं के साथ जाते थे। इसलिए उनके द्वारा किए गए युद्धों के वर्णन अत्यधिक सजीव, वास्तविक और हृदयग्राही हैं।
- ऐतिहासिकता का अभाव : यद्यपि रचनाओं के नायक पृथ्वीराज चौहान या बीसलदेव जैसे ऐतिहासिक महापुरुष हैं, लेकिन कवियों ने अपनी कल्पना का इतना अधिक प्रयोग किया है कि उनमें ऐतिहासिक तथ्य दब गए हैं। तिथियों, घटनाओं और पात्रों के मामले में ये ग्रंथ इतिहास की कसौटी पर खरे नहीं उतरते।
- संकुचित राष्ट्रीयता : उस समय राष्ट्र की भावना अत्यंत संकुचित थी। सौ-पचास गांवों या एक छोटे से राज्य को ही राजा अपना राष्ट्र मानते थे। पड़ोसी राज्य पर हमला विदेशी आक्रमणकारियों से भी अधिक महत्वपूर्ण माना जाता था। संपूर्ण भारत को एक राष्ट्र मानने की चेतना का सर्वथा अभाव था।
- वीर और श्रृंगार रस की प्रधानता : युद्धों का मुख्य कारण प्रायः कोई सुंदर राजकुमारी हुआ करती थी। इसलिए आश्रयदाताओं की वीरता और राजकुमारियों के रूप-सौंदर्य का अद्भुत समन्वय इस काल के साहित्य में मिलता है।
- डिंगल और पिंगल भाषा का प्रयोग : वीर रस के वर्णन के लिए अपभ्रंश और राजस्थानी के मिश्रण से बनी कर्कश भाषा का प्रयोग किया गया। वहीं, कोमल भावों और श्रृंगार के लिए अपभ्रंश और ब्रज भाषा के मधुर मिश्रण का प्रयोग हुआ।
- विविध छंदों का प्रयोग : चंदबरदाई और जगनिक जैसे कवियों ने दोहा, चौपाई, छप्पय, तोमर, त्रोटक, और गाहा जैसे अनेक छंदों का इतनी कुशलता से प्रयोग किया है।

आदिकालीन साहित्य में धार्मिक और दार्शनिक प्रभाव

आदिकालीन हिंदी साहित्य में धर्म और दर्शन का गहरा प्रभाव था, जो उस समय के समाज के जीवन, संस्कारों और नैतिक मूल्यों को परिभाषित करता था। इस काल के साहित्य में जैन, बौद्ध और हिंदू धार्मिक शिक्षाओं का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। भक्ति आंदोलन के तत्व, जैसे भगवान के प्रति समर्पण और नैतिकता की प्रधानता, इस युग के साहित्य को भी प्रभावित करते हैं। सिद्ध साहित्य ने समाज में व्याप्त पाखंड और आडंबर का विरोध किया और ध्यान तथा तत्त्वज्ञान को महत्व दिया। नाथ साहित्य योग, तपस्या, और गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित था, जिसने आध्यात्मिक साधना और सामाजिक सुधार का संदेश दिया। जैन साहित्य ने धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ नैतिकता और आचारों पर जोर दिया। इन सभी धार्मिक और दार्शनिक धाराओं ने आदिकालीन साहित्य में सामाजिक और धार्मिक चेतना के विकास में सहायक भूमिका निभाई।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

- जैन, बौद्ध और हिंदू धर्म के शिक्षाओं का साहित्य में समावेश।
- भक्ति आंदोलन के तत्वों से नैतिकता और आध्यात्मिकता की प्रधानता।
- सिद्ध साहित्य में ध्यान, तत्त्वज्ञान और सामाजिक पाखंड विरोध।
- नाथ साहित्य में योग, तपस्या, गुरु-शिष्य परंपरा और सामाजिक सुधार।
- जैन साहित्य में धार्मिक शिक्षा, नैतिकता और जीवनदर्शन।
- इन धाराओं ने समाज में धार्मिक चेतना और सामाजिक सुधार को प्रभावित किया।
- धार्मिक विश्वासों और दर्शन ने साहित्य की विषय.वस्तु और प्रवृत्ति निर्धारित की।

भाषा शैली

इस काल के साहित्य में हमें मूल रूप से अपभ्रंश, डिंगल-पिंगल, मैथिली और खड़ी बोली चार भाषाओं के प्रयोग दिखते हैं।

अपभ्रंश

यह भाषा योग मार्ग के बौद्धों की रचनाओं में, नाथपंथियों के प्रचार-ग्रंथों में, जो मूलतः राजपूताना तथा पंजाब की प्रचलित भाषा में लिखे गये हैं और जैन आचार्य मेरुतुंग, सोमप्रभु सूरि आदि के ग्रंथों में प्रयुक्त मिलती है। विद्यापति ने भी अपभ्रंश में छोटे-छोटे ग्रंथों की रचना की है। सिद्धों के द्वारा प्रयुक्त अपभ्रंश में पूर्वी प्रभाव तथा जैन साहित्य में नागर अपभ्रंश का विशेष प्रभाव दिखाई देता है। इन ग्रंथों में चरित्र, रासक, चतुष्पदी ढाल, दूहा आदि छंदो का प्रयोग हुआ है। विषय की दृष्टि से तांत्रिक साहित्य, वीरगाथा साहित्य, श्रृंगार काव्य तथा दर्शन साहित्य का आरंभिक रूप अपभ्रंश के ही अंतर्गत दिखाई देता है। वस्तु.स्थिति यह है कि उस समय के कवियों की बहुप्रचलित भाषा अपभ्रंश ही थी। सिद्धों और नाथों की कृतियों में देश-भाषा-मिश्रित अपभ्रंश का रूप प्राप्त होता है। इस भाषा को संध्या भाषा भी कहा जाता है क्योंकि यह भाषा अपभ्रंश के संध्या काल में प्रचलित थी। अपभ्रंश के इस संध्या भाषा रूप से ही पुरानी हिंदी जिसे ब्रज और खड़ी बोली जैसे काव्य-भाषा का ढाँचा कहा गया है, पनपी है। अपभ्रंश भाषा जैसे-जैसे देशभाषा की ओर बढ़ती गई, इसमें संस्कृत, तत्सम और तद्भव शब्दों के प्रयोगों को अधिकाधिक स्थान प्राप्त होता गया। अरबी-फारसी के शब्द भी प्रचलन में आने लगे।पद्य दोनों रूपों में रचना की प्रधानता इस युग में मिलती है।

डिंगल और पिंगल

प्रादेशिक बोलियों के साथ ब्रजभाषा तथा मध्य देश की भाषा के संयोग से जो भाषा बनी वह पिंगल कहलाई जबकि अपभ्रंश भाषा से युक्त बोलचाल की राजस्थानी के साहित्यिक रूप को डिंगल कहा गया। हिंदी साहित्य के इतिहास में इनका विशेष स्थान है। पिंगल भाषा में फारसी, अरबी, तुर्की

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

के शब्दों का भी प्रयोग मिलता है। डिंगल और पिंगल का मिश्रित रूप वीरगाथाओं में दिखाई देता है। भाषा की दृष्टि से डिंगल साहित्य बहुत ही अव्यवस्थित है। विशेष रूप से परवर्ती परिवर्तनों के कारण इसके शुद्ध रूप का पता लगाना कठिन है। पिंगल के अतिरिक्त डिंगल में अपभ्रंश के प्रभाव के कारण संयुक्ताक्षरों और अनुस्वारों की अधिकता हो गई है। इस कारण से डिंगल भाषा कुछ-कुछ कृत्रिम लगती है। चारण कवियों ने डिंगल और पिंगल दोनों का साथ-साथ प्रयोग किया है। वस्तुतः डिंगल राजस्थानी की रचना शैली की भाषा है और पिंगल ब्रजभाषा की रचना शैली की भाषा।

मैथिली भाषा

मैथिली बिहार में प्रयुक्त एक बोली है और यह हिंदी की एक विभाषा मानी जाती है। यही कारण है कि विद्यापति की पदावली को हिंदी का ग्रंथ माना जाता है। आदिकालीन ग्रंथों में विद्यापति की पदावली का विशेष स्थान है।

खड़ी बोली

अमीर खुसरो के काव्य में जनता की उस बोली के दर्शन होते हैं जो कालांतर में विकसित होकर खड़ी बोली कहलाई। तत्कालीन जनभाषा के दर्शन खुसरो की पहेलियों और मुकरियों में मिलता है। यह दिल्ली और मेरठ की आस-पास की भाषा थी। इस भाषा की क्रियाएँ हिंदी की हैं, साथ ही इसमें अरबी-फारसी के भी काफी शब्द मिलते हैं।

आदिकालीन हिंदी साहित्य की भाषा और शैली की विशेषताएँ

- अवधी, ब्रज, खड़ी बोली और बिहारी जैसी लोक भाषाओं का समिश्रण।
- भाषा सरल, प्रवाहमय और आम जन के संवाद के अनुकूल।
- शैली में मुख्य रूप से वीर रस और भक्ति रस की प्रधानता।
- लोक गीतों का स्पष्ट प्रभाव, विशेषकर गाथा और रास छंदों में।
- दोहा, चौपाई, गाथा, रास आदि छंदों का प्रयोग।
- प्राकृतिक, सहज और भावपूर्ण अभिव्यक्ति की विशेषता।
- डिंगल और पिंगल भाषाओं का उपयोग, डिंगल वीर रस के लिए, पिंगल श्रृंगार रस के लिए।
- साहित्य में युद्धों और वीरता का सजीव चित्रण।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

निष्कर्ष

आदिकालीन हिंदी साहित्य, भाषा और भाव दोनों ही दृष्टियों से संक्रमण का काल था। यह वह समय था जब अपभ्रंश की कोख से हिंदी जन्म ले रही थी। यद्यपि इस काल का साहित्य युद्धों की विभीषिका, राजनीतिक उथल.पुथल और धार्मिक भटकाव के बीच लिखा गया, फिर भी इसमें जीवन के हर रंग, वीरता, प्रेम, वैराग्य, रहस्य और मनोरंजन का समावेश है।

संदर्भ

1. डॉ. नगेंद्र एवं डॉ. हरदयाल : हिंदी साहित्य का इतिहास।
2. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी : हिंदी साहित्य उद्भव और विकास।
3. के. अयप्पा पनीकर : मध्यकालीन भारतीय साहित्य - एक संकलन।
4. डॉ. नारायणसिंह भाटी : डिंगल गीत साहित्य।
5. डॉ. मौसम कुमार ठाकुर : विद्यापति का सौंदर्यबोध।